हिंदू राष्ट्र क्यों आवश्यक है ?

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण विषय ' * ' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

-भूमिका -ग्रंथके ज्ञानसंबंधी 'एक विद्वान'द्वारा भाष्य ७

१. प्रस्तावनात्मक विवेचन १४
* 'हिंदू धर्म' भारतीयोंकी राष्ट्रीयता और भारतभूमि ही 'हिंदू राष्ट्र' ! १५
२. राष्ट्रीय समस्याओंके दृष्टिकोणसे 'हिंदू राष्ट्र' क्यों आवश्यक ? १८
२ अ. सामाजिक एकताके लिए 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! १८
२ आ. नागरिकोंके उत्तम स्वास्थ्यके लिए 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! २०
२ इ. उचित शिक्षा मिलनेके लिए 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! २२
२ ई. क्रीडा क्षेत्र विकसित करने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! २४
२ उ. अपनी भाषाकी रक्षाके दृष्टिकोणसे 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! २४
२ ऊ. कृषकोंके हितके लिए 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! २७
२ ए. आर्थिक दुर्दशा सुधारने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! २९
२ ऐ. भ्रष्टाचार निर्मूलन हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ३३
२ ओ. अपराधियोंसे सुरक्षा हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ३६
२ औ. भारतको अंतर्बाह्य सुरक्षित रखने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ३९
३. धार्मिक समस्याओंकी दृष्टिसे 'हिंदू राष्ट्र' क्यों बनना चाहिए ? ४८
३ अ. धार्मिक आक्रमणोंके प्रतिकार हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ४८
* हिंदुओंका बढता धर्मांतरण * 'लव जिहाद' ४८
* दंगे - विघटनवादी धर्मांधोंका शस्त्र ! ५०
३ आ. वैचारिक आक्रमणोंको रोकने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' ही आवश्यक ! ५१
३ इ. पश्चिमी संस्कृतिके प्रतिकार हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ५४
३ ई. धर्मश्रद्धाओंका भंजन रोकने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ५५
* गोहत्या * गंगाका 'मृतनदी' बननेकी ओर होता मार्गक्रमण ! ५६
३ उ. मंदिरोंसहित रामसेतुकी रक्षा करने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ५९
३ ऊ. हिंदुओंको न्याय मिलने हेतु 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ६२

* अल्पसंख्यकोंका तुष्टिकरण * हिंदूविरोधी कानून बनाना ६३
* कश्मीरी हिंदुओंका पुनर्वास न करना * भगवा आतंकवाद ६७
३ ए. विश्वभरके हिंदुओंकी रक्षाके लिए 'हिंदू राष्ट्र' आवश्यक ! ७०
४. प्रचलित राज्यपद्धतियोंकी अपेक्षा 'हिंदू राष्ट्र' ही श्रेष्ठ क्यों ? ७३
४ अ. भारतीय लोकतंत्रकी निरर्थकता ! ७३
४ अ १. भारतीय राजनीति अर्थात व्यर्थ हुई मानव शक्ति ! ७३
४ अ २. राजनीतिक दलोंका अधःपतन ! ७५
४ अ ३. सदोष चुनाव प्रक्रिया ! ७८
४ अ ४. संसदीय सदनके जनप्रतिनिधियोंका अधःपतन ! ८१
४ अ ५. दोषपूर्ण प्रशासकीय तंत्र ! ८४
४ अ ६. न्यायव्यवस्थाकी दयनीय स्थिति ८७
४ अ ७. सिद्धांतहीन प्रसारमाध्यम ८९
४ अ ८. राजनेताओंद्वारा स्वार्थ हेतु 'संविधान'का उपयोग ! ९०
४ अ ९. भारतीय लोकतंत्रकी कुछ अन्यायकारी त्रुटियां ! ९१
४ अ १०. लोकतंत्रकी खेदपूर्ण वर्तमान स्थिति ! ९२
४ आ. विश्वकी प्रचलित राज्यप्रणालियोंका खोखलापन ! ९४
४ इ. धर्मनिरपेक्ष नहीं; अपितु धर्मसापेक्ष राज्यपद्धति ही आदर्श ! ९८
५. धर्माधारित 'हिंदू राष्ट्र' क्या है ? १००
६. धर्माधारित 'हिंदू राष्ट्र'की स्थापना हेतु योगदान आवश्यक ! १०१
७. अखिल मानवजातिके हितमें हिंदू धर्माधारित राज्यप्रणाली ही आवश्यक ! १०४
८. आदर्श 'हिंदू राष्ट्र' ऐसा होगा ! १०६
परिशिष्ट १ – 'हिंदू राष्ट्र' अथवा 'हिंदू राष्ट्र'की मांग करना, संवैधानिक है अथवा असंवैधानिक ? १०८
परिशिष्ट २ – 'हिंदू राष्ट्र'की स्थापना हेतु अखिल भारतीय हिंदू अधिवेशन' ! ११०

भूमिका

विश्वमें ईसाइयोंके १५७, मुसलमानोंके ५२, बौद्धोंके १२, जबकि यहूदियोंका १ राष्ट्र है । हिंदुओंका राष्ट्र इस सौरमंडलमें कहां है ? हां, हिंदुओंका एक सनातन राष्ट्र १९४७ तक इस पृथ्वीपर था । आज इस राष्ट्रकी स्थिति क्या है ?

स्वतंत्रताके समयका एवं आजका भारत !

१९४७ में जहां १ पैसेका भी ऋण नहीं था, उस भारतमें आज प्रत्येकनागरिक अपने सिरपर ३२,८१२ रुपयोंके ऋणका भार ढो रहा है । १९४७ में ३३ प्रतिशतसे अधिक निर्यात करनेवाला भारत आज १ प्रतिशतसे भी अल्प निर्यात कर रहा है । जहां अधिकसे अधिक १० से २० विदेशी प्रतिष्ठान थे, उस भारतमें आज ५,००० से भी अधिक विदेशी प्रतिष्ठानोंको सिरपर उठाया जा रहा है । जहां एक भी संवेदनशील जनपद (जिला) नहीं था, उस भारतमें आज ३०० से भी अधिक जनपद संवेदनशील बन गए हैं । जहां प्रति नागरिक एक-दो गौएं होती थीं, उस भारतमें अबाध गोहत्याके कारण आज १२ व्यक्तियोंपर एक गाय है । विदेशमें जाकर अत्याचारी कर्जन वाइली, ओडवायर जैसे शासकोंको ईसावासी करनेवाला भारत आज संसदपर आक्रमण करनेवाले अफजलको फांसी देनेसे कतरा रहा है ! देशाभिमान जागृत रखनेवाले भारतसे, देशाभिमान गिरवी रखनेवाला भारत, निम्नतम भ्रष्टाचार करनेवाले भारतसे भ्रष्टाचारकी उच्चतम सीमातक पहुंचा भारत, सीमापार झंडा फहरानेवाले भारतसे आज नहीं तो कल, कश्मीरसे हाथ धो बैठनेकी प्रतीक्षा करनेवाला भारत... यह सूची लिखते समय भी मन आक्रोशित हो रहा है; परंतु 'गणकी तो दूर, मनकी भी लज्जा न रखनेवाले' शासनकर्ता सर्वत्र गर्वसे सीना तानकर घूम रहे हैं । मुसलमान आक्रमणकारियों एवं धूर्त ब्रिटिशोंने भी भारतीय जनताको जितना त्रस्त नहीं किया, उससे सैकडों गुना लोकतंत्रद्वारा उपहारस्वरूप मिले इन शासनकर्ताओंने मात्र ६ दशकोंमें कर दिया है ! 'लोगोंद्वारा, लोगोंके लिए, लोगोंका शासन', लोकतंत्रकी ऐसी व्हाख्या *भारत जैसे विश्वके सबसे बडे देशके लिए 'स्वार्थांधोंद्वारा स्वार्थके लिए चयनित* (निर्वाचित) स्वार्थी शासनकर्ताओंका शासन', ऐसी हो चुकी है । इस ग्रंथमें भारतकी अनेक समस्याएं वर्णित हैं । ये समस्याएं पढकर कुछ लोगोंके मनमें संदेह उत्पन्न होगा कि 'हिंदू राष्ट्र'में ये समस्याएं दूर कैसे होंगी ? क्या इतिहासमें ऐसा कभी हुआ है ? ऐसा समझनेवाले लोग यह समझ लें कि – हां, इतिहासमें ऐसा हुआ है ! छत्रपति शिवाजी महाराजका 'हिंदू राष्ट्र (हिंदवी स्वराज्य)' स्थापित होते ही ऐसी तत्कालीन समस्याएं दूर हुई हैं !

छत्रपति शिवाजी महाराजका 'हिंदू राष्ट्र' स्थापित होते ही सबकुछ कुशल-मंगल !

छत्रपति शिवाजी महाराजका जन्म होनेके पूर्व भी आजके समान ही हिंदू स्त्रियोंका शील सुरक्षित नहीं था, प्रत्यक्ष जीजामाताकी जिठानीको ही पानी लाते समय यवन सरदारने अगवा कर लिया था । उस

समय भी मंदिर भ्रष्ट किए जाते थे एवं गोमाताकी गर्दनपर कब कसाईका छुरा चल जाएगा, यह कोई बता नहीं सकता था । महाराजका 'हिंदू राष्ट्र' स्थापित होते ही मंदिर ढहाना बंद हुआ, इतना ही नहीं; अपितु मंदिर ढहाकर बनाई मस्जिदोंका रूपांतरण पूर्ववत मंदिरोंमें हुआ । मौन रहकर क्रंदन करनेवाली गोमाताएं आनंदित होकर रंभाने लगीं । 'गोहत्या बंद की जाए !', ऐसी मांगके लिए कभी शासनके पास लाखों हस्ताक्षर नहीं भेजे गए अथवा महाराजने भी कोई 'गोहत्या प्रतिबंधक विधेयक' मंत्रीमंडलमें प्रस्तुत नहीं किया । केवल 'हिंदू राष्ट्र'की स्थापना ही हिंदूद्वेषियोंको भयभीत करनेके लिए पर्याप्त थी ! आज हमें महंगाई दिखती है । क्या कभी पढा है कि 'महाराजके शासनकालमें प्रजा महंगाईसे त्रस्त थी' ? 'जय जवान, जय किसान'की घोषणा करनेवाले शासनकर्ता आज जवान एवं किसान, दोनोंकी नृशंस हत्या करवा रहे हैं । महाराजको तो केवल कृषकोंके (किसानोंके) प्राण ही नहीं, अपितु उनकेद्वारा उपजाई फसल भी अमूल्य लगती थी । उन्होंने ऐसी आज्ञा ही दी थी कि 'कृषकोंद्वारा उपजाई फसलके डंठलको भी कोई हाथ न लगाए ।' महाराजने 'किसानों'की ही भांति 'जवानोंको'भी संभाला था । वे लडाईमें घायल हुए अनेक *सैनिकोंको पुरस्कारके साथ सोनेके आभूषण देकर सम्मानित करते थे ।* कारगिल युद्धमें वीरगति प्राप्त करनेवाले सैनिकोंकी विधवाओंके लिए वर्ष २०१० में 'आदर्श' सोसाइटी बनाई गई; परंतु उसमें एक भी सैनिककी विधवाको सदनिका (फ्लैट) नहीं मिली । भ्रष्टासुरोंने ही वे सभी सदनिकाएं हडप लीं ! इसके विपरीत महाराजने सिंहगढके युद्धमें वीरगति प्राप्त करनेवाले तानाजीके पुत्रका विवाह कर उनके परिजनोंको सांत्वना दी ! 'हिंदू राष्ट्र'में भारतको त्रस्त करनेवाली बाह्य समस्याएं भी दूर होंगी ! 'हिंदू राष्ट्र'में आंतरिक समस्याएं दूर होंगी, उसी प्रकार बाह्य समस्याएं भी दूर होंगी । इन समस्याओंमें मुख्य हैं पाकिस्तान एवं चीनद्वारा भारतपर संभावित आक्रमण । शिवकालमें भी ऐसी ही स्थिति थी । औरंगजेब 'शिवा'का छोटासा राज्य नष्ट करनेको तुला था; परंतु 'महाराजका राज्याभिषेक और विधिवत 'हिंदू राष्ट्र' स्थापित हुआ', यह सुनते ही उसके पैरोंतलेकी भूमि खिसक गई ! तदनंतर आगे महाराजके स्वर्गारोहणतक वह मात्र महाराष्ट्रमें ही नहीं; अपितु दक्षिणमें भी नहीं आया ! एक बार 'हिंदू राष्ट्र'की स्थापना हुई कि हमारे सर्व पडोसी अपनेआप सीधे हो जाएंगे !

'हिंदू राष्ट्र'में मुसलमानोंका क्या करोगे ?

'हिंदू राष्ट्र'का विषय निकलते ही एक निरर्थक प्रश्न तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियोंद्वारा पूछा जाता है, 'हिंदू राष्ट्र'में मुसलमानोंके साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा ? वास्तवमें यह प्रश्न मुसलमानोंको पूछना चाहिए । वे नहीं पूछते । वे तो यही कहते हैं, 'हंसके लिया पाकिस्तान, लडके लेंगे हिंदुस्तान !' तथापि इस प्रश्नका भी उत्तर है । आगामी 'हिंदू राष्ट्र'में मुसलमानोंसे ही नहीं; अपितु सभी पंथियोंसे वैसा ही व्यवहार किया जाएगा जैसा शिवराज्यमें किया गया था ! संक्षेपमें, सूर्योदय होनेसे पूर्व सर्वत्र अंधकार छाया रहता है, दुर्गंध आती है; परंतु सूर्यके उगते ही अंधकार अपनेआप नष्ट हो जाता है, सर्व दुर्गंध वातावरणमें लुप्त हो जाती है । अंधकार अथवा दुर्गंधसे कोई नहीं कहता, 'दूर हटो, सूर्य उग रहा है !' यह अपनेआप ही होता है । उसी प्रकार आज भारतमें *फैला विविध*

समस्यारूपी अंधकार एवं दुर्गंध 'हिंदू राष्ट्र'के स्थापित होते ही अपनेआप नष्ट हो जाएगी । धर्माचरणी शासनकर्ताओंके कारण भारतकी सर्व समस्याएं दूर होंगी तथा सदाचारके कारण सर्व जनता भी सुखी होगी ! किन्हीं एक-दो समस्याओंके विरोधमें लडनेकी अपेक्षा 'हिंदू राष्ट्र' स्थापित करना आवश्यक मात्र भारतके लोगोंके लिए ही नहीं; अपितु अखिल मानवजातिके कल्याण हेतु स्थापित किया जानेवाला 'हिंदू राष्ट्र' सहज ही स्थापित नहीं होगा । पांडव मात्र पांच गांव चाहते थे, वे भी उन्हें सहजतासे नहीं मिल सके । हमें तो कश्मीरसे कन्याकुमारीतक अखंड 'हिंदू राष्ट्र' चाहिए । इसके लिए बडा संघर्ष करना होगा । भारतकी किन्हीं एक-दो समस्याओंके (उदा. गोहत्या, धर्मांतरण, गंगा नदीका प्रदूषण, कश्मीर, राममंदिर, स्वभाषारक्षा आदिके) विरोधमें पृथक-पृथक लडनेकी अपेक्षा सर्व समविचारी व्यक्ति एवं संस्थाएं मिलकर 'हिंदू राष्ट्र- स्थापना'का ही ध्येय रखकर कार्य करेंगे, तो यह संघर्ष थोडा सुलभ होगा । स्वामी विवेकानंद, योगी अरविंद, वीर सावरकर, प.पू. गोळवलकर गुरुजी जैसे हिंदू धर्मके महान योद्धाओंको अपेक्षित धर्माधारित 'हिंदू राष्ट्र' स्थापित होने हेतु आवश्यक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक सामर्थ्य हिंदुनिष्ठोंको मिले, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !